www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी भावसंपदा जगाएँ — श्रेय पाएँ

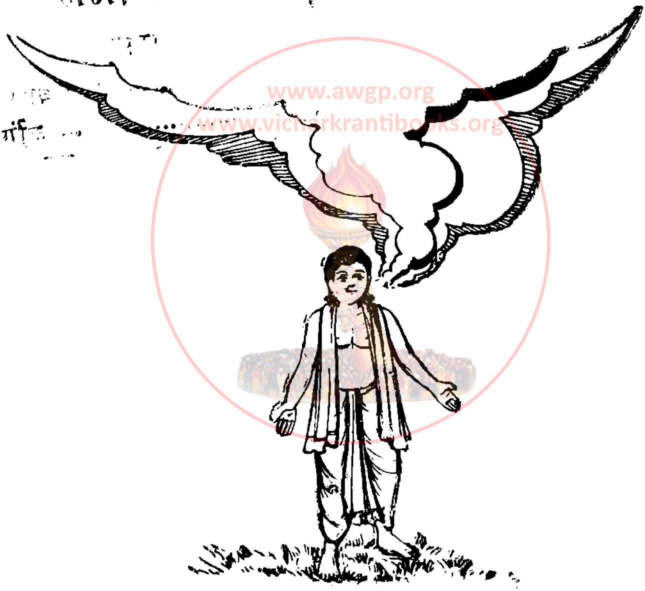

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI

MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी भावसम्पदा जगाएँ–श्रेय पाएँ

—★—

सृष्टि का भार विस्तार बहुत बड़ा है। इसका संतुलन बनाये रखना और नियन्ता की गौरव गरिमा के अनुरूप उसका स्वरूप बनाये रखना एक बहुत बड़ी बात है। इसी प्रयोजन में सहायक बनने—सहायता पहुँचाने हेतु ईश्वर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कलाकृति के रूप में मनुष्य को सृजा है। अन्यथा उसके लिए सभी प्राणी समान प्रिय होने के कारण समान रूप से अनुदान पाने के अधिकारी थे। मनुष्य को जो कुछ अधिक अतिरिक्त मिला है उसका प्रयोजन उसकी वैयक्तिक सुख सुविधाओं का अभिवर्धन नहीं वरन् यह है कि वह इन अतिरिक्त साधनों के आधार पर उसका हाथ बटाने में सृष्टि संतुलन के सुखद पक्ष को भारी बनाये रहने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। विवेकवान मानव प्राणी को मात्र शरीर यात्रा के ताने बाने बुनने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। लोभ मोह के जाल जंजाल में जकड़ा नहीं रहना चाहिए वरन् उन तथ्यों की ओर भी ध्यान देना चाहिए जो अतिरिक्त रूप में मिले हुए मानव जीवन की विशेषताओं के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। जीवन के स्वरूप, प्रयोजन लक्ष्य और उपयोग का चिन्तन न किया जाय, उसे उपेक्षा के गर्त में डाले रहा जाय तो इस प्रमाद का परिणाम आज न सही अगले दिनों अनन्त पश्चात्ताप के रूप में ही भुगतना पड़ सकता है।

आत्मिक प्रगति की कसौटी एक यही है कि मनुष्य आत्मचिन्तन आत्मसुधार और आत्मविकास में कितना रस लेता है। यदि चिन्हपूजा की तरह पूजा पत्री की थोड़ी सी लकीर भर पिटती है तो समझना चाहिए कि अभी बाल बुद्धि—बाल क्रीड़ा में ही निरत है ईश्वर की सच्ची उपासना के साथ ईश्वर का प्रगाढ़ अनुग्रह भी अविछिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, जो आत्मशोध के रूप में ही हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भौतिक सुविधाएं मनुष्य अपनी सहज सुलभ क्षमता का सदुपयोग करके पाता रहता है जो सतर्कता और तत्परता नहीं बरतता वह रोता कलपता रहता है - दीन दयनीय स्थिति में पड़ा रहता है उसमें ईश्वर का कुछ लेना देना नहीं। भौतिक उन्नति अवनति एवं सुख-दुःख की अनुभूति में मनुष्य का स्तर ही प्रधान कारण है। ईश्वर ने हर किसी को कर्म करने और तदनुरूप फल पाने के लिए खुले रूप में छोड़ दिया है। हमें अपने सुव्यवस्थित जीवन क्रम का श्रेय पुण्य पुरुषार्थ को देना चाहिए और दु,ख दारिद्र के पीछे भी अपने पिछले क्रिया-कलाप का मूल्यांकन करना चाहिए। इस झंझट में ईश्वर को अकारण ही सम्मिलित नहीं करना चाहिए।

हर विवेकवान व्यक्ति को यह तथ्य अधिकाधिक गम्भीरता पूर्वक हृदयंगम करना चाहिए कि निर्वाह के अतिरिक्त उसे जो कुछ उच्चस्तरीय अनुदान मिले हैं वे मौज मजा करने के लिए नहीं—बेटे पोतों को गुलछर्रे उड़ाने के लिए दौलत जमा करने के लिए नहीं— वरन् ईश्वरीय प्रयोजनों की पूर्ति के लिए हैं। कोई अमीर कोई गरीब—कोई अज्ञ कोई विज्ञ बनकर रहे और इस दुनिया में विषमता विशृङ्खलता फैले यह अव्यवस्था ईश्वर को अभीष्ट नहीं, वह अपने सभी मानव पुत्रों को लगभग एक ही स्तर का निर्वाह करते हुए— समता को अपनाकर चलते हुए— देखना चाहता है। दूसरों की तुलना में अधिक विलासी और संग्रही होकर जीना स्पष्टतः जीवनोद्देश्य से विपरीत मार्ग पर चलना है। इस मनोवृत्ति के व्यक्ति की विडम्बना रचकर भी ईश्वरीव अनुग्रह का एक कण प्राप्त कर सकेंगे, इसमें सन्देह ही समझना चाहिए।

विभूतिवानों को अपने अतिरिक्त सौभाग्य पर सन्तोष और गर्व अनुभव करना चाहिए उन्हें दूसरों की अपेक्षा अधिक उच्च पद और अधिक भारी उत्तरदायित्व सौंपा गया है, सेना में सिपाही बहुत होते हैं पर नायक, कप्तान, जनरल आदि के पद तो चुने और छँटे हुए व्यक्तियों को ही दिये जाते हैं। जिन्हें पेट और परिवार पालने से अधिक आगे बढ़ने की उत्कण्ठा एवं योग्यता प्राप्त है उन्हें मुक्त कण्ठ से ईश्वर का विशिष्ट कृपा पात्र एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिनिधि समझा जाना चाहिए। इस कृपा को सार्थक बनाने के लिए उस स्तर के व्यक्तियों को लोभ और मोह का अन्धकार चीरते हुए आगे बढ़ना चाहिए और अवरोधों को कुचलते हुए साहसपूर्वक उस मार्ग पर चलना चाहिए जिस पर कि सच्चे भगवद्भक्त अनादिकाल से चलते रहे हैं।

विभूतिवानों की गणना में भावनाशील प्रतिभाशाली विद्या-बुद्धि सम्पन्न, कलाकार, लोकनायक, विज्ञानी, राजनेता, धनीमानी प्रभृति वर्ग के लोगों को गिना जाता है। जिन्हें अपने में इन विभूतियों का जितना अंश दृष्टिगोचर हो उन्हें अपने को ईश्वर का उतना ही विश्वास पात्र और उच्च पद पर नियुक्त प्रिय पुत्र मानना चाहिए कि वह इस धरोहर का श्रेष्ठतम उपयोग करने के प्रयत्न में कुछ कोर कसर न छोड़े।

सबसे बड़ा और सबसे प्रथम विभूतिवान व्यक्ति वह है जिसके अन्तः-करण में उत्कृष्ट जीवन जीने और आदर्शवादी गतिविधियाँ अपनाने के लिए निरन्तर उत्साह उमड़ता है। ऐसा साहस होता रहता है जो लोभ, मोह के भव बन्धनों के रोके रुक ही न सके। व्यक्तिगत वासना, तृष्णा के जाल जंजाल में ही आम तौर से लोग परिवार वालों की मनोकामनायें पूरी करते रहने में जुटे रहते हैं। इस चक्रव्यूह को वेध सकना उन्हीं के लिए सम्भव है जिनके भीतर आत्मबोध का आलोक प्रस्फुटित होने लगा। भावनाशील व्यक्ति ही ऐसा साहसपूर्ण निर्णय करते हैं कि निर्वाह मात्र के साधनों में सन्तोष करें और परिवार को उतना ही सम्पन्न बनाने तक अपनेकर्त्तव्यकी इतिश्री मानें जितने में कि अपने समाजके औसत नागरिक को जीवन-निर्वाह करना पड़ता है। भावनाशीलता की दिव्यविभूति की सार्थकता के लिए इस प्रकार का साहसिक निर्णय नितान्त आवश्यक है अन्यथा परमार्थ के लम्बे-चौड़े सपने मात्र कल्पना ही बनकर रह जायेंगे।

वासना और तृष्णा—लोभ और मोह के पिशाचों का मुँह इतना सर्वभक्षी है कि मनुष्य अपना समय, श्रम, बुद्धि बल, मनोबल ही नहीं दीन ईमान, लोक परलोक होम देने पर भी इन्हें तृप्त नहीं कर सकता। इनका आकर्षण भी इतना प्रचण्ड है कि जो इनसे लिपटा उसे समय का एक क्षण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं सम्पत्ति का एक कण भी किसी अन्य कार्य के लिए लगा सकना सम्भव नहीं होता। सत्कर्मों के लिए फुरसत न मिलने—समस्याओं में उलझे रहने और आर्थिक तंगी का बहाना करने रोना रोने—के अतिरिक्त और कुछ करते धरते बनता ही नहीं। यदि निर्वाह मात्र से सन्तुष्ट रहने और परिवार के प्रति उचित कर्त्तव्य भर निभाने की सीमा में सीमित रहा जाय तो सामान्य स्तर का व्यक्ति भी जीवन लक्ष्य की पूर्ति के लिये पर्याप्त अवसर प्राप्त कर सकता है और इतना कुछ कर सकता है कि उस अनुकरणीय आदर्शवादिता की मुक्तकण्ठ से सराहना की जा सके।

भावनाओं को यदि उत्कर्ष की दिशा में बढ़ चलने का अवसर मिले तो उसके लिए एक दिशा है वह है, अपने चिन्तन में उत्कृष्टता और व्यवहार में आदर्शवादिता का सघन समावेश करने की। चिन्तन की उत्कृष्टता की निरन्तर प्रेरणा यह रहती है कि उसका व्यक्तित्व आदर्श उज्जवल और अनुकरणीय हो। ऐसा व्यक्ति संयम, सदाचार, कर्त्तव्य का पूरा-पूरा ध्यान रखता है और अपने पुरुषार्थ को प्रखर बनाकर मानवी क्षमता के सदुपयोग से सम्भव हो सकने वाली प्रगति को सर्वसाधारण के सम्मुख प्रमाण रूप में प्रस्तुत करता है। उत्कृष्ट चिन्तन हर घड़ी इसी प्रयास में लगा रहता है कि किस प्रकार गुण, कर्म, स्वभाव का स्तर श्रेष्ठतम बनाया जाय, पुरुषार्थ को किस प्रकार प्रखर और व्यवस्थित किया जाय। आत्मनिर्माण में प्रचण्ड तत्परता को देखकर ही यह प्रमाण प्राप्त होता है कि चिन्तन में वस्तुतः उत्कृष्टता का कितना अंश घुल मिल सका है। भावना का अदृश्य पक्ष यही है।

भावनात्मक उत्कर्ष का दृश्य पक्ष है आदर्शवादी क्रिया कलाप। लोक लोक मंगल—जन कल्याण—समाजोत्थान सेवा साधना एवं परमार्थ प्रयोजन की गतिविधियों में इस तथ्य को गतिशील रहता देखा जा सकता है। भावनाशील व्यक्ति स्वार्थ भरी संकीर्णता की सड़न में कृमिकीटकों की तरह संतुष्ट रह ही नहीं सकता। उसे उन्मुक्त आकाश में उड़ने वाले पक्षी की तरह अपना हर क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत दीखता है। विश्वमानव की समस्यायें होती हैं। विश्व कल्याण में उसे अपना निज का स्वार्थ दिखाई पड़ता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस्तु, निजी महत्वाकांक्षाओं की ओर से उसे मुँह तोड़ना पड़ता है पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा की त्रिविध स्वार्थपरतायें उसे दुर्बुद्धिजन्य दुर्गन्ध मात्र प्रतीत होती हैं।

भावनाशील व्यक्तियों की कुछ न कुछ उपलब्धियाँ विश्व कल्याण के लिये समर्पित होती ही रहती हैं। ऐसे व्यक्ति सोचते हैं यदि कुटुम्ब में एक व्यक्ति और अधिक होता तो उसके भोजन वस्त्र का भी प्रबन्ध करना ही पड़ता। परमार्थ को घर का एक अतिरिक्त सदस्य मान लेने पर उसके ऊपर होने वाला खर्चा अखरता नहीं वरन् अनिवार्य आवश्यकताओं में जुड़ जाता है। फिर न उसके लिए कटौती करनी पड़ती है और न हिचक, कंजूसी की जरूरत रहती है तो उनका खर्च अनिवार्य और स्वाभाविक प्रतीत होने लगता है यदि परमार्थ प्रयोजनों को भी जीवन क्रम में सम्मिलित कर लिया जाय तो वह न तो भारी प्रतीत होता है और न असह्य। वरन् सहज सरल गति से निर्धन स्थिति में भी यथा क्रम चलता ही रहता है।

चिन्तन में उत्कृष्टता और आचरण में आदर्शवादिता का प्रगाढ़ समावेश कर सकने में समर्थ मनस्विता और तेजस्विता की आवश्यकता पड़ती है। उसे अपनाने का जो शौर्य साहस प्रदर्शित कर सके उसे भावनाशील कहा जायगा। दूसरे शब्दों में सदुद्देश्य के लिए दुस्साहसपूर्ण संकल्प करने वाले एवं उनके परिपालन में बड़े से बड़ा त्याग बलिदान करने के सुदृढ़ निश्चय को भावशीलता कह सकते हैं। सद्भाव सम्पन्न व्यक्ति उच्चस्तर पर सोचते हैं और उच्च आचरण पर तत्परतापूर्वक कटिबद्ध अड़े खड़े रहते दीखते हैं। यदि ऐसा न होता तो भावना के खदान में से ही नर रत्न निकलने का तथ्य कैसे मूर्तिमान रहता? ऐतिहासिक महापुरुषों में से प्रत्येक अनिवार्य रूप से भावना शील रहा है। उसके अन्तःकरण में उच्चस्तरीय आकांक्षा कोलाहल करती रहती है। क्रमशः वे इतनी प्रखर हो जाती हैं कि उन्हें तृप्त किये बिना चैन नहीं मिलता।

युग परिवर्तन के महान् प्रयोजन की पूर्ति के लिये जिस पूँजी की सबसे प्रथम—सबसे अधिक मात्रा में आवश्यकता है। वह 'भावना' ही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसका जागरण, अभिवर्धन किये बिना और किसी प्रकार युगधर्म की माँग को पूरा नहीं किया जा सकता। यों युग-निर्माण परिवार की शृङ्खला में ऐसी ही कड़ियाँ जोडी गई हैं जिनमें जन्म जन्मान्तरों से संचित भाव सम्पदा का समुचित अंश विद्यमान हैं। पत्रिकाओं के ग्राहक अथवा किसी संगठन के सदस्य मात्र वे लोग नहीं हैं जो आज नव निर्माण के पुण्य प्रयोजन में लोक नायक की भूमिका सम्पन्न करने के लिए अग्रसर हो रहे हैं यह परिवार अनायास ही इकट्ठा नहीं हो गया है वरन् किसी दिव्यदर्शी के जन सागर में से अपनी पैनी दृष्टिसे ढूँढ़-ढूँढ़ कर इन मणि मुक्तकों को एकत्रित किया है और एक बहुमूल्य हार के रूप में उसे पिरोया संजोया है। युग-निर्माण परिवार के निर्माण का तात्विक स्वरूप यही है। जिसके पीछे कुछ ठोस आधार न हो उसे ठोक पीट कर भी कुछ अधिक नहीं बनाया बढ़ाया जा सकता। बालू के महल कहाँ खड़े होते हैं। लकड़ी के शस्त्र कहाँ काम देते हैं, खोटे सिक्कों से व्यापार कहाँ होता है? जिनमें महानता के रूप में परिणत होने वाली भावना के तत्व विद्यमान हैं, उन्हीं का संकलन संगठन युग-निर्माण परिवार के रूप में हुआ है।

बीजांकुर के रूप में जो भाव सम्पदा प्रज्ञा परिवार के सदस्यों में विद्यमान है उसे उभारना और विकसित परिपक्व किया जाना आज की महती आवश्यकता है। इन पंक्तियों द्वारा उसी का आह्वान उद्बोधन किया जा रहा है। अहंता और ममता के परिपोषण तक ही जिनकी गतिविधियाँ सीमित हैं जिन्हें धन, भोग और अहंता की पूर्ति के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं ऐसे धरती के भार लोगों की गणना अंधकार में भटकने वाले असुरों में ही होगी भले ही वे कितने ही वैभव सम्पन्न क्यों न हों।

अपने परिवार के हर परिजन को अपनी भाव सम्पदा का अवलोकन करना चाहिए उसे उठाना और उभारना चाहिए। चिन्तन में उत्कृष्टता का और व्यवहार में आदर्शवादिता का समावेश होना चाहिए। व्यावहारिक आध्यात्म वाद यही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावना की शक्ति जितनी ही उभरेगी–परिपक्व होगी उतनी ही प्रतिभा निखरती चली जायगी। प्रतिभाशाली व्यक्तियों की प्रखरता सभी को आकर्षित प्रभावित और मुग्ध करती है। हर कोई प्रतिभाशाली बनना चाहता है क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों की सफलतायें बहुत करके प्रतिभावानों को ही मिलती हैं। वे जिस कार्य को हाथ में लेते हैं उसे समग्र सजगता के साथ पूरा करते हैं। फलस्वरूप बड़ी खूबसूरती के साथ सफल होते हैं। आधे अधूरे मन से उपेक्षा और अन्यमनस्कता के साथ किये गये काम अस्त-व्यस्त, असंबद्ध होते हैं अस्तु उनका असफल अपूर्ण अथवा कुरूप होना भी स्वाभाविक ही है। ऐसे लोगों पर उदासी एवं निराशा छाई रहती है। दूसरे लोग उनकी भर्त्सना उपेक्षा करते हैं तिरस्कार उपहास का व्यवहार करते हैं। इन्हीं सब बातों का संमिश्रण असफल जीवन क्रम के रूप में दृष्टि-गोचर होता है प्रतिभाशाली इन अवमाननाओं से बचे रहते हैं क्योंकि उनकी प्रखर भावशीलता क्रमशः सजग कर्मठता के रूप में बदलती चली जाती है, फलतः व्यक्तित्व में सर्वतोमुखी निखार उत्पन्न होता है, प्रतिभा इसी भाव परिपक्वता का नाम है।

कहा जाता रहा है कि मानव जाति के भविष्य निर्माण का यह अभि-यान विभूतियों की साधन सामग्री पर्याप्त मात्रा में जुटाने से ही सम्भव होगा। विभूतियों में भावना और प्रतिभा दो का महत्व अस्सी प्रतिशत है। शेष विद्या, कला, सम्पत्ति, सत्ता की विभूतियाँ तो बहिरंग मानी जाती हैं उन सबका सम्मिलित मूल्य बीस प्रतिशत है। संसार में जो कुछ महत्वपूर्ण होता रहा है उन घटना क्रमों के पीछे भावना की महत्ता सर्वोपरि रही है। इतिहास की महान उपलब्धियों का श्रेय बहुत करके भावउत्कृष्टता को ही दिया जाना चाहिए। भावना ही जब मनोयोग और पुरुषार्थ के साथ जुड़ कर प्रखर सक्रिय होती है तो उसी को प्रतिभा कहा जाता है। प्रतिभा जन्म-जात भी हो सकती है पर जहाँ उसकी न्यूनता हो वहाँ मनस्वी भाव सम्पदा बोध के द्वारा उसकी पूर्ति सहज ही की जा सकती है।

**

क्र० २००, प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org